❑उल्थौ

साहित्य रौ मकसद

प्रेमचंद

उल्थाकार : नन्द भारद्वाज

उल्थाकार परिचै

हिंदी अर राजस्थानी रा कवि, कथाकार, समीक्षक अर संस्कृतिकर्मी रै रूप में ख्यातनांव नंद भारद्वाज रौ जलम बाड़मेर रै माडपुरा गांव में 1 अगस्त, 1948 नै होयौ। राजस्थानी में 'अंधार पख' (कविता-संग्रै), 'दौर अर दायरौ' (आलोचना), 'सांम्ही खुलतौ मारग' (उपन्यास), 'बदळती सरगम' (कहाणी-संग्रै) छप्योड़ी पोथ्यां। हिंदी में ई अेक कहाणी-संग्रै अर तीन कविता-संग्रै छप्योड़ा। साहित्यिक पत्रिका 'हरावळ' रौ केई बरसां संपादन। 'तीन बीसी पार' (राजस्थानी कहाणी संकलन) अर 'रेत पर नंगे पांव' (हिंदी कविता संचयन) रौ अेन.बी.टी. सारू अर 'जातरा अर पड़ाव' (राजस्थानी कविता संकलन) रौ साहित्य अकादेमी सारू संपादन। राजस्थानी अकादमी, बीकानेर सूं नरोत्तमदास स्वामी गद्य पुरस्कार (1984), साहित्य अकादेमी पुरस्कार (2004), के. के. बिड़ला फाउंडेशन कानी सूं बिहारी पुरस्कार (2008), सूचना अर प्रसारण मंत्रालय सूं भारतेंदु पुरस्कार (2010) अर राजस्थानी भाषा, साहित्य एवं संस्कृति अकादमी रै सूर्यमल्ल मीसण शिखर पुरस्कार समेत केई संस्थावां सूं सम्मानित। दूरदर्शन जयपुर रै वरिष्ठ निदेशक ओहदै सूं सेवानिवृत्त।

पाठ परिचै

'कुछ विचार' नांव री पोथी में प्रेमचंद रा हिंदी निबंध है, जिणां मांय अेक निबंध 'साहित्य का उद्देश्य' ई महताऊ है। सन् 1936 में प्रगतिशील लेखक संघ रै 'लखनऊ अधिवेशन' में प्रेमचंद सभापति रै आसण सूं जिकौ भासण दियौ, उणनैं ई ज्यूं रौ त्यूं इण निबंध में अंवेरयौ है। इणी निबंध रौ राजस्थानी उल्थौ 'साहित्य रौ मकसद' नांव सूं ख्यातनांव कवि-कथाकार नन्द भारद्वाज आपरी पोथी 'आलोचना री आधार भोम' मांय सामल करयौ है।

इण निबंध मांय बताईज्यौ है कै साहित्य रौ मकसद प्रगतिशीलता होवै। सिरजक जद समाज में सुख रौ अभाव देखै, तद उणरै मन मांय असंतोष रा भाव जाग जावै अर वौ उणरै प्रतिकार मांय जिकौ सिरजण करै, वौ सिरजण प्रगतिशील सिरजण होवै। साहित्य आपरै समै रौ प्रतिबिंब होवै अर साहित्यकार-कलाकार मनगत सूं ई प्रगतिशील होवै। इणरै सागै ई लेखक सिरजण री उपयोगिता माथै ई जोर देवै। लेखक कैवै कै सिरजक आपरी कला रै फूठरापै सूं परिवेस रै विगसाव में सैयोग देवै अर उणनैं समाज सारू उपयोगी बणावै। इणरै सागै ई साहित्य रौ मकसद जथारथ रौ चित्रण करणौ पण है। लेखक कैवै कै बंगलां अर म्हैलां में इज साहित्य रौ वास नीं होवै, गांवां रा झूंपड़ां अर गरीबी मांय भी साहित्य रौ समान रूप सूं वास होवै। लेखक नैं आपरै सिरजण में समाज रै जथारथ नैं प्रगट करणौ चाईजै। साहित्य रौ मकसद मनोभावां नैं संवेदनसील बणावणा भी है। निबंधकार कैवै कै रचनाकार में जित्ती ज्यादा संवेदना होसी, उणरी रचना बित्ती ई ऊंचै दरजै री होसी।

प्रेमचंद मनोरंजन सूं ई बेसी मानसिक संस्कारां अर जीवणमूल्यां माथै जोर देवै। निबंधकार रौ कैवणौ है कै साहित्य सूं ई मन रौ संस्कार होवै। साहित्य रौ अेक मकसद समाज रा सुख-दुख आखै मिनख-समाज साम्हीं लावणा अर समाज मांय सेवा-भावना रौ बधेपौ भी है। इणरै सागै ई साहित्य नैं सत्ता लारै चालण री ठौड़ उणरै आगै मसाल दिखावण रौ कारज करणौ चाईजै अर मिनखाचारै रा ऊजळा आदर्शां री थापना करणी चाईजै। साहित्य रौ

मकसद दलित, पीड़ित अर पिछड़्योड़ा लोगां री हिमायत करणौ भी है। इणरै सागै ई भला मिनखां में बधेपौ करणौ, जीयाजूण रै साच रौ जथारथ प्रगट करणौ, कमी-बेसी नैं उजागर करणौ, मनोरंजन अर सुंदरता रौ मंडण करणौ, आमजन री भासा में जथारथ, आदर्श अर कर्मठता रौ संदेस देवणौ भी साहित्य रौ मकसद होवै। निबंधकार कैवै कै म्हारी दीठ में खरौ साहित्य वौ ईज है, जिणमें ऊंचौ चिंतन, स्वाधीनता रा भाव, सुंदरता रौ सार, सिरजण री आतमा अर जीयाजूण रै जथारथ रौ उजाळौ होवै।

साहित्य रौ मकसद

साहित्य में वा इज रचना कथीजै, जिणमें कोई गाढौ साच उजागर होयौ व्है, जिणरी भासा मीठी, मंज्योड़ी अर सोवणी व्है अर जिणमें मन अर मगज माथै असर राखण री कूवत व्है अर साहित्य में आ खासियत पूरसल उणी औस्था में पैदा व्है, जद उणमें जीवण रौ साच अर मन री ऊरमा परगट व्है। साहित्य री अलेखूं परिभासावां करीजी, पण म्हारै विचार सूं उणरी सगळां सूं आछी परिभासा जीवण री आलोचना व्है, भलांई वा निबंध रूप में व्हौ, भलांई कथा या काव्य सरूप में, उणनै आपां रै जीवण री निरपेख आलोचना अर अरथावणी करणी चाईजै।

आपां जिण जुग नैं अबार पार कियौ, उणनैं जीवण सूं कोई मतळब कोनी हौ। आपां रा साहित्यकार कल्पना री अेक स्रिस्टी ऊभी करनै उणमें मनचींता तिलस्म बांध्या करता। कठै ई फसाने-अजायब री दास्तान ही, कठैई दास्ताने-खयाल री अर कठैई चंद्रकांता संतति री। आं कथावां रौ मकसद फगत मनोरंजन हौ अर आपां रै अजब प्रेम-रस री धाप। साहित्य रौ जीवण सूं कोई लगाव व्है, आ बात कल्पना सूं परे ही। कथा कथा है, जीवण जीवण, दोनूं अेक-दूजै री विरोधी चीजां जाणीजती। कवियां माथै ई व्यक्तिवाद रौ रंग चढियोड़ौ हौ, प्रेम रौ सिरै रूप वासनावां री पूरती करणौ हौ अर फूठरापै रौ आंख्यां नैं।

निस्चै ई कविता अर साहित्य रौ मकसद आपां रै मनोभावां रै आवेग नैं बधावणौ व्है, पण मिनख रौ जीवण फगत नारी-पुरुस प्रेम रौ जीवण नीं व्है। जिकौ साहित्य सिणगारू मनोभावां अर वां सूं उपजण वाळै वैराग, निरासा इत्याद तांई मैदूद व्है— जिणमें दुनियां अर दुनियां री अबखायां सूं छेड़ौ राखणौ ई जीवण री सारथकता समझी व्है, कांई वौ आपांरी विचार अर भाव सूं जुड़ियोड़ी जरूरतां पूरी कर सकै? सिणगारू मनोभाव मानवी जीवण रौ फगत अेक अंग व्है अर जिकौ साहित्य घणकरौ इणी सूं ताल्लुक राखतौ व्है, वौ उण जात अर उण जुग सारू गरब करण री बात नीं व्है सकै अर नीं इणरी आछी रुचि रौ परियांण ई व्है सकै।

कवियां री रचना ई वांरी जीवारी रौ साधन ही अर कविता री कदरदानी रईसां अर अमीरां टाळ दूजौ कुण कर सकै? आपां रै कवियां नैं आम जीवण रौ आमनौ करण अर उणरी असलियत सूं रूबरू होवण रा कै तौ औसर ई नीं हा या हरेक छोटै-बडै माथै कीं इण भांत री मनोगत गिरावट छायोड़ी ही कै मानसिक अर बौद्धिक जीवण रह्यौ ई कोनी।

म्हे इणरौ दोस उण बगत रा साहित्यकारां माथै नीं राख सकां। साहित्य आपरै जुग रौ पड़बिंब व्है। जिका भाव अर विचार लोगां रै हीयै नै परस करै, वै ई साहित्य माथै ई आपरी छाया राखै। अैड़ै अबखै अर गिरावट वाळै बगत में लोग कै तौ रळी करै कै अध्यात्म अर वैराग में मन रमावै।

जद साहित्य माथै संसार रै विणास रौ रंग चढ्योड़ौ व्है, उणरौ अेक-अेक सबद वैराग में डूब्योड़ौ व्है, बगत री उल्टी चाल रै रोवणै सूं भरियोड़ौ व्है अर सिणगारू भावां रौ पड़बिंब बण्योड़ौ व्है, तौ समझ लेवौ कै जात जड़ता अर हाण रै पंजां में अळूझ्योड़ी है अर उणमें उद्यम अर जूझण रौ बळ बाकी नीं बच्यौ। उण ऊंचा अर ऊजळै जीवण रा सपनां बिसराय दिया है, उणरै मांय दुनियां नैं देखण-समझण री सगती लोप व्हैगी है।

पण म्हांरी साहित्य री तास में तेजी सूं बदळाव अवस आयौ। अबै साहित्य फगत मन-बिलमाव रौ साधन नीं रह्यौ, मनोरंजन सूं अलायदा, उणरौ कीं औरूं मकसद बण्यौ है, अबै वौ फगत नायक-नायिका रै संजोग-विजोग री कथा नीं सुणावै, बल्कै जीवण री अबखायां माथै विचार करै अर वांरौ निवेड़ौ करै। अबै वौ स्फूरती अर प्रेरणा सारू अजब, इचरजभरी घटनावां नीं सोधै अर नीं अनुप्रास री खोज करै, पण उणरी वां सवालां में रुचि बधी है, जिका समाज अर मिनख माथै गैरौ असर राखै। उणरी आलै दरजै री मौजूदा कसौटी अणभूती री वा तेजी अर रफत है, जिणसूं वौ आपां रा भावां अर विचारां में गति अर वेग पैदा करै।

आपां जीवण में जिकौ कीं देखां, कै जिकी आपां पर बीतै, वै ई अणभव अर वै ई घाव कल्पना में पूगनै साहित्य सिरजण री प्रेरणा उपजावै। कवि या साहित्यकार में अणभूती रौ जित्तौ तीखौ आवेग व्है, उणरी रचना उत्ती ई आकरसी अर आलै दरजै री व्है। जिण साहित्य सूं आपां री रुचि नीं जागै, आत्मिक अर मानसिक तोस नीं मिळै, आपां रै चित्त में सगती अर गति नीं पैदा व्है, आपां रै हीयै में रूप-राग नीं जागै, जिकौ आपां रै मांय साचौ संकळप अर अबखायां नैं काबू करण री साची इंछा-सगती नीं पैदा करै, वौ आज आपां सारू अकारथ है। वौ साहित्य कैवावण रौ कोई इधकारी कोनी।

आधुनिक साहित्य में हकीकत बयान करण री प्रवृत्ति इत्ती बध रैयी है कै आज री कहाणी जठै तांई संभव व्है, परतख अणभवां री सींव सूं बारै नीं जावै, आपां नै फगत इत्तौ ई सोचण सूं संतोस नीं व्है कै मनोविग्यान री दीठ सूं सगळा ई चरित मिनखां सूं मेळ खावता है, म्हे आ तसल्ली पण चावां कै वै साच-माच रा मिनख व्है अर लेखक आपरी बणती कोसीस में वांरै ई जीवण चरित रौ वरणन कियौ है, क्यूंकै कल्पना सूं घड़ियोड़ा मिनखां में म्हांरौ विस्वास कोनी, वांरा कारज अर विचार म्हांरी चेतणा माथै कीं असर नीं राखै। म्हांनै इण बात री तसल्ली व्है जावणी चाईजै कै लेखक जिकी रचना करी है वा परतख अणभवां रै आधार माथै करी है अर चरितां री जबान में वौ खुद बोलै।

म्हांरी सगळी निबळायां री जिम्मेवारी म्हांरी कुरुचि अर आपसी प्रेमभाव री कमी री वजै सूं है। जठै साची सुंदरता अर प्रेम रौ विस्तार है, वठै कमजोरियां कठै रैय सकै! प्रेम ई तौ अध्यात्म सरूपी भोजन व्है अर सगळी कमजोरियां इणी भोजन रै नीं मिळणै या दूसित भोजन रै मिळण सूं पैदा व्है। कळाकार आपां रै चित्त में सुंदरता रौ मनोभाव पैदा करै अर प्रेम रौ गरमास। उणरौ अेक वाक्य, अेक सबद, अेक संकेत इण भांत आपां रै मांय जा बैठै कै म्हांरौ अंतस उजास सूं भरीज जावै, पण जद तांई कळाकार रूप-रळी सूं धापनै मस्ती में नीं व्है अर उणरी खुद री आतमा खुद उण जोत सूं उजासित नीं व्है, वौ आपां नैं उजास किण भांत देय सकै।

सवाल इण बात रौ है कै सुंदरता कांई चीज है? खुलै रूप में औ सवाल नूंवौ पण लागै, क्यूंकै सुंदरता नैं लेयनै म्हारै मन में कोई संकौ कै बैम कदैई रैवै ई कोनी। म्हे सूरज रौ ऊगणौ अर डूबणौ देख्यौ है, दिनुगै अर सिंझ्या री लालिमा देखी है, सुंदर सौरम सूं भरियोड़ा फूल देख्या है, मधरी बोलियां बोलण वाळी चिड़कल्यां देखी है, कळ-कळ संगीत उच्चारती नदियां देखी है, निरत करता झरणा देख्या है, आ ई कुदरत री रूपाळी सुंदरता है।

अै दरसाव देखनै आपां रौ अंतस क्यूं खिल जावै? इण वास्तै कै आं मांय रंग अर धुन रौ आछौ मेळ व्है। साजां रौ सुर-मेळ ई संगीत रै मोवणैपण रौ कारण व्है। आपां री रचना ई तत्त्वां रै समानुपाती संजोग सूं बणी है, इण वास्तै म्हांरी आतमा सदीव उणी समानता अर आपसी ताळ-मेळ री खोज में रैवै। साहित्य कळाकार रै अध्यात्मी ताळ-मेळ रौ परतख रूप है अर औ ताळ-मेळ ई उण सौवणै सरूप री सिरजणा करै, विणास नीं। वौ विस्वास, साच, हमदरदी, न्याव-प्रेम अर ममता रै भावां री स्रिस्टी करै। जठै अै भाव है, वठै ई लूंठौ टिकाव अर जीवण है, जठै इणरौ अभाव है, वठै ई फूट, विरोध अर स्वारथ है— वैर-विरोध, दुस्मीचारौ अर मौत है। औ अळगाव-कुदरती विरोध जीवण रौ अैनांण है, ज्यूं रोग कुदरत रै विरोध में आहार-विहार री निसांणी व्है। जठै कुदरत सूं अनुकूलता अर ताळ-मेळ है, वठै अंवळाई अर आप-मतळबीपणौ किण भांत कायम रैय सकै। जद आपां री आतमा कुदरत रै

खुलै वायुमंडळ में पळी–पोसी व्है, तौ नीचता अर कुटळाई रा कीड़ा खुदोखुद हवा अर उजाळै में खतम व्है जावै। कुदरत सूं न्यारौ व्हैयनै खुद में ई सीमित व्है जावण सूं ई आ सगळी मनगत अर भावगत परेसानियां पैदा व्है। साहित्य आपां रै जीवण नैं सुभाविक अर स्वाधीन बणावै। दूजा सबदां में उणी वजै सूं मन संस्कारी बणै। औ ई उणरौ मूळ मकसद व्है।

साहित्यकार या कळाकार सुभाव सूं ई प्रगतिसील व्है, जे औ उणरौ सुभाव नीं व्हैतौ तौ स्यात वौ साहित्यकार ई नीं व्हैतौ। उणनैं आपरै मांय ई अेक कमी–सी लखावै अर बारै पण इणी कमी नैं पूरी करण सारू उणरी आतमा बेचैन रैवै। आपरी कल्पना में वौ मिनख अर समाज नैं सुख अर बंधण–मुगती री जिण औस्था में देखणी चावै, वा उणनैं दीखै कोनी। इणी वास्तै मौजूदा मानसिक अर समाजू औस्थावां सूं उणरौ काळजौ चूंटीजतौ रैवै। वौ आं अप्रिय औस्थावां रौ अंत कर देवणौ चावै, जिणसूं कै औ संसार में जीवण अर मरण सारू सगळां सूं आछी जिग्यां व्है जावै। आई पीड़ अर औई भाव उणरै काळजै अर मगज नैं काम में उळझायां राखै। उणरौ पीड़ सूं भरयोड़ौ हीयौ इण बात नैं झेल नीं पावै कै अेक समुदाय क्यूं समाजू नेम–कायदां अर रूढियां रै बंधण में झिल्योड़ौ कळेस भोगतौ रैवै ? क्यूं नीं अैड़ौ सरंजाम कियौ जावै कै वौ गुलामी अर गरीबी सूं मुगती पा जावै ? वौ इण वेदना नैं जित्ती बेचैनी सूं अणभव करै उत्ती ई उणरी रचना में सगती अर साच पैदा व्है।

म्हनैं आ बात कैवण में कीं हिचक कोनी कै म्हैं दूजी चीजां री भांत कळा नैं ई उपयोग री ताकड़ी माथै तोलूं, निस्चै ई कळा रौ मकसद फूठरापै री आदत नैं पोखणौ व्है अर वा आपां रै अध्यात्म–आणंद री कूंची व्है, पण अैड़ौ कोई रुचिगत मानसिक अध्यात्म आणंद कोनी, जिकौ आपरै उपयोग रौ पाखौ नीं राखतौ व्है। आणंद खुद में अेक उपयोग–सम्मत चीज व्है अर उपयोग री दीठ सूं अेक ई चीज सूं आपां नैं सुख पण व्है अर दुख ई। आभै में छायोड़ौ गैरूं वरणौ उजास निस्चै ई अेक मोवणौ दरसाव व्है, पण असाढ में जे आभै में वैड़ी रंगत छा जावै, तौ वा म्हारै जीव नैं राजी करण वाळी नीं व्है सकै। उण बगत तौ आभै में काळी–काळी घटावां देख्यां ई म्हांरौ जीव राजी रैवै। फूलां नैं देखनै म्हे इण वास्तै राजी व्हां कै वांरै लारै फळ आवण री आस व्है। कुदरत सूं आपणै जीवण रौ सुर मिळायां राखण में म्हांनै इण वास्तै अध्यात्म सुख मिळै कै उण सूं म्हांरौ जीवण विगसै अर पोखीजै। कुदरत रौ विधान बुद्धि अर विकास व्है अर जिकां भावां, अणभूतियां अर विचारां सूं म्हांनै आणंद मिळै, वै इणी बधापै अर विगसाव में मददगार व्है, कळाकार आपरी कळा सूं रूप री स्रिस्टी करनै हालात नैं विकास सारू उपयोगी बणावै।

भाईचारौ अर बराबरी, सभ्यता अर प्रेम समाजू जीवण री सरूआत सूं ई आदर्शवादी लोगां रा सौवणा सपना रह्या है, धरमाचारी लोग धारमिक, नैतिक अर अध्यात्म रा बंधणां सूं इण सपनै नै साचौ बणावण रा लगूलग पण निरफळ जतन करता रह्या है। महात्मा बुद्ध, हजरत ईसा, हजरत मुहम्मद इत्याद सगळा पैगंबरां अर धरम धोरियां नीती री नींव माथै आ बराबरी री इमारत ऊभी करणी तेवड़ी, पण किणी नैं कामयाबी नीं मिळी अर छोटै–बडै रौ भेद जिण निरमम रूप सूं पैदा व्हेतौ रह्यौ है, स्यात् कदैई नीं व्हियौ।

'अजमायोड़ै नैं अजमावणौ मूरखाई व्है', इण कैवत रै मुजब जे अबै ई आपां धरम अर नीती रौ पल्लौ पकड़नै बराबरी रै ऊंचै मकसद तांई पूगणौ चावां तौ नाकामयाबी ई मिळैला। कांई आपां इण सपनै नैं किणी उछांछळै मगज री उपज समझनै बिसराय देवां ? तद तौ मिनख री तरक्की अर पूरणता सारू कोई आदर्श ई बाकी नीं रैवैला। इणसूं तौ आछौ है कै मिनख रौ वजूद ई मिट जावै। आदर्श नैं आपां सभ्यता री सरुआत सूं पाळ्यौ है, जिणरै वास्तै मिनख, भगवान जाणै कित्ती कुरबानियां करी है, जिणरै नतीजै सारू धरमां री नींव पड़ी। मानवी समाज रौ इतिहास जिण आदर्श नैं हासल करण रौ इतिहास है, उणनैं सगळां सारू मान्य समझनै, अेक अमिट साच समझनै, आपां नैं तरक्की रै मैदान में पांवडौ राखणौ है। आपां नैं अेक अैड़ै संगठण नैं पूरी तरै सूं मुकम्मल बणावणौ है, जठै बराबरी फगत नीतिगत बंधणां माथै आधारित नीं रैयनै, ज्यादा ठोस रूप हासल कर लेवै, आपां रै साहित्य नैं उणी आदर्श नैं आपरै साम्हीं राखणौ है।

म्हांनै फूठरापै री कसौटी बदळणी पड़ैला। अबार तांई आ कसौटी अमीरी अर भोग-विलास रै ढंग री ही। आपां रौ कळाकार अमीरां रौ पल्लौ पकड़्योड़ौ रैवणौ चावतौ, वांरी कद्रदानी माथै उणरौ वजूद टिक्योड़ौ हौ अर वांरै ई सुख-दुख, आसा-निरासा, होड अर वैर-विरोध री अरथावणी कळा रौ मकसद हौ। उणरी निजरां अंतैपुर अर बंगलां कांनी उठती, झूंपड़ा अर खंडहर उणरै ध्यान रा इधकारी नीं हा। वांनै वौ मिनखीचारै रै दायरै सूं बारै समझतौ। कदैई आंरी चरचा करतौ ई तौ फगत चिगाळी काढण सारू। गांव रै आदमी रौ देहाती पैरवास अर तौर-तरीकां माथै हंसण सारू, वांरौ सीन-काफ सही नीं व्हेणौ कै मुहावरै रौ गळत उपयोग उणरै व्यंग-विडरूप री काम-चलाऊ सामग्री ही। वौ मिनख है, उणरी काया में पण काळजौ है अर उणमें ई हूंस है, आ कळा री कल्पना रै बारै री बात ही।

कळा नांव हौ अर अबार ई है, सांकड़ौ रूप पूजा रौ, सबद-योजना रौ, भाव-निबंध रौ। उणरै वास्तै कीं आदर्श कोनी, जीवण रौ कोई मकसद कोनी— भगती, वैराग, अध्यात्म अर दुनियां सूं छैड़ौ उणरी सगळां सूं ऊंची कल्पनावां है, म्हारै उण कळाकार रै विचार सूं जीवण रौ चरम मकसद औ ई है। उणरी दीठ अबार इत्ती विसाल कोनी कै जीवण रै संग्राम में सुंदरता रौ परम विगसाव देख सकै। उपवास अर नरमाई में ई सुंदरता रौ वजूद संभव है, आ बात स्यात् उणनैं कबूल कोनी। उणरै वास्तै फूठरापौ रूपाळी लुगाई है— उण टाबरां वाळी गरीब, रूप-बिहूणी लुगाई में नीं, जिकी टाबर नैं पाळी माथै सुवाण्यां बिनां परसेवौ बहावै, उण निस्चै कर राख्यौ है कै रंग्योड़ा होठां, गालां, अर भूंवारां में निस्चै ई फूठरापै रौ वासौ है, उणरै वास्तै उळझ्योड़ै केसां, फेफी आयोड़ा होठां अर कुम्हळायोड़ै रूप री अगवाणी करण री ताब कठै?

औ ओछी दीठ रौ दोस है। जे उणरी फूठरापौ देखण वाळी दीठ में विस्तार व्है जावै तौ वौ देख सकै कै रंग्योड़ै होठां अर गालां री आड में जे रूप रौ गीरबौ अर निठुराई छिप्योड़ी है, तौ आं मुरझायोड़ा होठां अर कुम्हळायोड़ा गालां रै आंसुवां में त्याग, सरधा अर तकलीफां सैवण री नरमाई है। हां, वां में सफाई कोनी, दिखावौ कोनी, ऊपरी कंवळाई कोनी।

म्हांरी कळा जोबन रै प्रेम में व्याकळ है अर आई बात नीं जाणै कै जोबन छाती माथै हाथ राखनै कविता पढण, नायिका री निठुराई माथै रोवण कै उणरै रूप-गुमेज अर चोंचलां माथै माथौ धूण्यां सूं नीं संज आवै, जोबन नांव व्है आदर्शवाद रौ, हींयाणी रौ, अबखायां रौ आमनौ करण वाळी इंछा रौ, त्याग रौ।

म्हांनै अमूमन आ सिकायत व्है कै साहित्यकारां सारू समाज में कोई जिग्यां कोनी— खासकर भारत रा साहित्यकारां सारू। केई बारला सभ्य मुलकां में तो साहित्यकार समाज रौ माणजोग सदस्य व्है अर बडा-बडा अमीर अर सरकार रा मंत्री तकात वां सूं मिळाप में आप सारू गरब री बात समझै, पण हिंदुस्तानी मिनख तौ अबार तांई मध्यकाळ री औस्था में पड़्यौ है। जे साहित्यकार अमीरां रौ ओलियाड़ बणण रौ जीवण अपणाय लियौ व्है अर आन्दोलनां, हलगलां अर क्रांतियां सूं बेखबर होय, जिकी समाज में व्हे रही है, आपरी न्यारी दुनियां बणाय उणमें ई हंसतौ-रोवतौ व्है, तौ इण दुनियां में उण सारू जिग्यां नीं व्हैण में कोई अन्याव कोनी।

साहित्यकार रै साम्हीं आजकाल जिकौ आदर्श राखीज्यौ है, उणरै मुजब साहित्य री प्रवृत्ति अहंवाद कै व्यक्तिवाद तांई सीमित नीं रही, वौ मनोविग्यानी अर समाजू व्है, अबै वौ व्यक्ति नैं समाज सूं न्यारौ करनै नीं देखै, पण समाज रै अेक अंग सरूप देखै, इण वास्तै नीं कै वौ समाज माथै हकूमत करै, इणनैं आपरै स्वारथ-पूरती रौ औजार बणावै— जाणै उणमें अर समाज में कोई सनातन वैर-विरोध व्है, बल्कै इण वास्तै कै समाज रै वजूद रै साथै ई उणरौ वजूद कायम है अर समाज सूं अळगौ व्हियां उणरौ मोल नाकुछ रै बरोबर व्है जावै।

आपां मांय सूं जिकां नैं सगळां सूं आछी सीख अर सगळां सूं आछी मानसिक सगत्यां मिळ्योड़ी है, वां माथै समाज बाबत वांरी कीं जिम्मेवारी पण है, म्हे उण मानसिक पूंजीपती नैं पूजनीक नीं मानां, जिकौ समाज रै धन सूं ऊंची पढाई हासल करनै उणनै आपरै स्वारथ-साधण में लगावै। समाज सूं निजी लाभ उठावणौ अैड़ौ काम व्है, जिणनैं कोई साहित्यकार पसंद नीं करैला। इण मानसिक पूंजीजीवी रौ फरज है कै वौ समाज रै लाभ नैं आपरै निजू

लाभ सूं बधीक ध्यान देवण जोग समझै— आपरै हूनर अर हुंसियारी सूं समाज नैं बधीक सूं बधीक लाभ पुगावण री कोसीस करै।

जे आपां अंतरराष्ट्रीय साहित्यकार सम्मेलनां री रपट पढां तौ आपां देखांला कै अैड़ौ कोई सास्त्र-सम्मत, समाजू, इतिहासू अर मनोविग्यानी सवाल नीं है, जिण माथै उणमें विचार नीं व्हियौ व्है। इणरै उल्टौ म्हे खुद रै ग्यान नैं जद देखां तौ म्हांनै खुद रै अग्यान माथै लाज आवै। म्हे समझ राख्यौ है कै साहित्य रचना सारू तौ बस तुरत-बुद्धि अर तेज कलम व्हेणी घणी, पण आई सोच म्हारै साहित्यिक पतन रौ कारण है, म्हांनै आपरै साहित्य रौ माप-जोख ऊंचौ करणौ व्हैला, जिणसूं के वौ समाज री बधीक अणमोल सेवा कर सकै, जिणसूं समाज में उणनै वौ औहदौ अर आदर मिळै, जिणरौ वौ हकदार व्है, जिणसूं वौ जीवण रै हरेक पख री आलोचना-विवेचना कर सकै अर आपां दूजी भासावां अर साहित्य रौ अैंठवाड़ौ खायनै नैहचौ नीं करां, खुद पण उण पूंजी नैं औरूं बधावां।

जिकां नैं धन-दौलत वाल्ही लागै, साहित्य रै मिंदर में वां सारू कोई जिग्यां नीं व्है। अठै तौ वां सेवकां री दरकार है, जिकां सेवा नैं ई आपरै जीवण री सारथकता मानी व्है, जिकां रै हीयै में दरद री तड़फ व्है अर प्रीत री हूंस व्है। आपरी इज्जत तौ खुद रै हाथ व्है। जे आपां साचै मन सूं समाज री सेवा करांला तौ मान-सम्मान अर ख्यात स्सै कदम चूमैली— फेर मान-सम्मान री चिंता आपां नैं व्है ई क्यूं? अर उणरै नीं मिळण सूं आपां नैं निरासा क्यूं व्है? सेवा में जिकौ अंतस रौ आणंद व्है, वौई म्हांरौ पुरस्कार है— म्हांनै समाज माथै आपरौ बडपण जतावण, उण माथै आपरौ रौब जमावण री हवस क्यूं व्है? दूजां सूं बधीक आराम सूं रैवण री इंछा ई क्यूं संतावै? म्हे तौ समाज री धजा लेय आगै चालण वाळा सिपाही हां अर सादै जीवण साथै ऊंची निजर राखणी म्हारै जीवण रौ मकसद व्है। जिकौ मिनख साचौ कळाकार है, वौ स्वारथी जीवण रौ प्रेमी नीं व्है सकै, उणनैं तौ आपरै मन री तुस्टी वास्तै दिखावै री जरूत नीं व्है, उणसूं तौ उणनैं घिरणा ई व्हैणी चाईजै। म्हां साहित्यकारां में करम-सगती री पण कमी लखावै, औ अेक कड़वौ साच है। पण म्हे उण कानी सूं आंख बंद कोनी कर सकां। अबार तांई म्हे साहित्य रौ जिकौ आदर्श म्हारै साम्हीं राख्यौ हौ, उण वास्तै करम री जरूत नीं ही।

जद तांई साहित्य रौ काम फगत मन-बिलमाव रौ सामान जुटावणौ, फगत लोरियां गा-गायनै सुवाणणौ, फगत आंसू ढळकायनै जीव हळकौ करणौ हौ, तद तांई उण वास्तै करम री जरूत नीं ही, वौ अेक दीवानौ हौ, जिणरौ गम दूजा खावता। पण म्हे साहित्य नैं फगत मन-बिलमाव अर विलास री चीज नीं समझां। म्हांरी कसौटी माथै वौ ई साहित्य खरौ जाणीजैला, जिणमें आला दरजै रौ चिंतण व्है, आजादी रौ भाव व्है, सुंदरता रौ सार व्है, सिरजण री आतमा व्है, जीवण रै साच रौ उजास व्है— जिकौ म्हारै मांय आगै बधण रौ आवेग, आफळ अर बेचैनी पैदा करै, सुवाणै नीं, क्यूंकै अबै औरूं सोवणौ म्रित्यु री निसांणी है।

⌘⌘

अबखा सबदां रा अरथ

मकसद=उद्देस्य, ध्येय। फूठरापौ=सुंदरता, सौंदर्य। ताल्लुक=तल्लौ-मल्लौ, संबंध। पड़बिंब=प्रतिबिंब, प्रतिछबि। निवेड़ौ=निष्कर्ष, निरणै, न्याव। अंवळाई=गोतौ, टेढौ अर लांबौ मारग। कुटळाई=मिजळापणौ, कुटिलता। वजूद=आपौ, अस्तित्व। परसेवौ=पसीनौ। हूंस=लगन, लगाव, प्रबळ इंछा। अळगौ=न्यारौ। ओलियाड़=हेठवाळ। चिगाळी=कूंट काढणी, चिगाणौ। लोप=अदीठ। बधीक=ज्यादा, बेसी। बिसराय=भुलावौ। उपजण=निपजण। अंतस=हियौ, हिवड़ौ। रूपाळी=फूठरी, सौवणी। ख्यात=जस, ख्याति। कंवळाई=नरमाई। सरंजाम=बंदोबस्त। अबखायां=बाधावां। अकारथ=बेकार, बिरथा। आफळ=खेचळ, प्रयत्न। उछांछळै=बोछरड़ौ, अचपळौ।

सवाल

विकळपाऊ पडूत्तर वाळा सवाल

1. 'साहित्य रौ मकसद' निबंध रा लेखक कुण है—
   (अ) प्रेमचंद (ब) सुभद्रा कुमारी चौहान
   (स) जयशंकर प्रसाद (द) रवीन्द्रनाथ
   ( )

2. किणरौ मकसद आपां रै मनोभावां रै आवेग नैं बधावणौ है ?
   (अ) समाज रौ। (ब) साहित्य रौ
   (स) जिनावरां रौ। (द) कोई भी नीं
   ( )

3. अध्यात्मरूपी भोजन है—
   (अ) साहित्य (ब) कविता
   (स) प्रेम (द) कोई भी नी
   ( )

4. कळाकार रै अध्यातमी ताळ-मेळ रौ परतख रूप है—
   (अ) समाज (ब) कुदरत
   (स) चित्राम (द) साहित्य
   ( )

साव छोटा पडूत्तर वाळा सवाल

1. संगीत रै मोवणैपण रौ कारण कांई होवै ?
2. साहित्य आपां रै जीवण नैं कांई बणावै ?
3. किणां रौ सुभाव प्रगतिसील होवै ?
4. साहित्य नैं आपरै जुग रौ कांई मान्यौ जावै ?

छोटा पडूत्तर वाळा सवाल

1. कुदरत री रुपाळी सुंदरता कांई है ?
2. साहित्य कैवावण रौ सही हकदार कुण है ?
3. साहित्य सिरजण री प्रेरणा कियां उपजै ?
4. साहित्यकार रै साम्हीं आजकाल किसौ आदर्श राखीज्यौ है ?

लेखरूप पडूत्तर वाळा सवाल

1. साहित्य रौ खास मकसद कांई-कांई होवै ?
2. साहित्यकारां नैं फूठरापै री कसौटी किण भांत बदळणी पड़ैला ?
3. प्रेमचंद रै मुजब आज रै साहित्य मांय कांई बदळाव आयौ है ?
4. आधुनिक साहित्य मांय हकीकत बयान करणै प्रवृत्ति किण भांत बध रैयी है ?

नीचै दिरीज्या गद्यांसां री प्रसंगाऊ व्याख्या करौ।

1. कवियां री रचना ई वांरी जीवारी रौ साधन ही अर कविता री कदरदानी रईसां अर अमीरां टाळ दूजौ कुण कर सकै ? आपां रै कवियां नैं आम जीवण रौ आमनौ करण अर उणरी असलियत सूं रूबरू होवण रा कै तौ औसर ई नीं हा या हरेक छोटै-बडै माथै कीं इण भांत री मनोगत गिरावट छायोड़ी ही कै मानसिक अर बौद्धिक जीवण रह्यौ ई कोनी।

2. सवाल इण बात रौ है कै सुंदरता कांई चीज है ? खुलै रूप में औ सवाल नूंवौ पण लागै, क्यूंकै सुंदरता नैं लेयनै म्हारै मन में कोई संकौ कै बैम कदैई रैवै ई कोनी। म्हे सूरज रौ ऊगणौ अर डूबणौ देख्यौ है, दिनुगै अर सिंझ्या री लालिमा देखी है, सुंदर सौरम सूं भरियोड़ा फूल देख्या है, मधरी बोलियां बोलण वाळी चिड़कल्यां देखी है, कळ-कळ संगीत उच्चारती नदियां देखी है, निरत करता झरणा देख्या है, आ ई कुदरत री रूपाळी सुंदरता है।

3. म्हांरी कळा जोबन रै प्रेम में व्याकळ है अर आई बात नीं जाणै कै जोबन छाती माथै हाथ राखनै कविता पढण, नायिका री निठुराई माथै रोवण कै उणरै रूप-गुमेज अर चोंचलां माथै माथौ धूण्यां सूं नीं संज आवै, जोबन नांव व्है आदर्शवाद रौ, हींयाणी रौ, अबखायां रौ आमनौ करण वाळी इंछा रौ, त्याग रौ।

4. साहित्यकार रै साम्हीं आजकाल जिकौ आदर्श राखीज्यौ है, उणरै मुजब साहित्य री प्रवृत्ति अहंवाद कै व्यक्तिवाद तांई सीमित नीं रही, वौ मनोविग्यानी अर समाजू व्है, अबै वौ व्यक्ति नैं समाज सूं न्यारौ करनै नीं देखै, पण समाज रै अेक अंग सरूप देखै, इण वास्तै नीं कै वौ समाज माथै हकूमत करै, इणनैं आपरै स्वारथ-पूरती रौ औजार बणावै।